# वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कथक की प्रासंगिकता

डॉ. शिखा शुक्ला
कत्थक नृत्यांगना

वर्तमान कालीन शैक्षणिक जागृति के कारण संगीत की तीनों धाराओं गायन, वादन व नृत्य को एक विषय के रूप में शिक्षण संस्थाओं में स्वीकार किया जाने लगा है। बुद्धजीवियों ने इन विषयों की गरिमा को पहचाना है। कलाकार भी शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव करने लगे हैं। अब संगीत सिर्फ कला और मनोरंजन का साधन ही नहीं रहा, आज यह विद्या भी है, विज्ञान भी और मानवीय, सामाजिक आवश्यकता भी।

कथक के विकास का अपना क्रम है जिसे पूरी तरह आत्मसात करना व सबको इससे परिचित कराना भी कलाकार का दायित्व है। कथक के विकास की यही विशेषता है कि समकालीन परिवेश को स्वीकार करते हुए भी इसके कलाकारों ने कथक के बीते कल को भुलाया नहीं बल्कि आज भी प्रासंगिकता को भी यथावत् बनाये रखा है।

वर्तमान शती में भी जन संस्थाओं व सरकारों द्वारा कथक की शिक्षा व प्रचार हेतु पर्याप्त कार्य किए जा रहे हैं। विशिष्ट समारोहों, विशिष्ट सम्मान, संगीत नाटक अकादमी के विशिष्ट सरकारी अलंकरणों से कथक कलाकारों को सम्मानित किया जा रहा है। किन्तु केवल उन्हीं कलाकारों को जिन्होंने कथक के विकास के लिये अधक साधना की है। अनेक विशिष्ट समारोह, स्वामी हरिदास सम्मेलन, खजुराहों महोत्सव, सम समारोह, सुर सिंगार समारोह, तानसेन समारोह आदि अनेक आयोजन युवा कलाकारों को प्रोत्साहित करते हैं तथा अपनी मंचीय प्रतिभा को विशिष्ट समारोहों व अलंकरणों हेतु तैयार करने तथा अधिक से अधिक निखार लाने का प्रयास करते हैं।

कथक नृत्य विज्ञान की भांति एक प्रयोगात्मक कला है जिसके लिए अभ्यास की प्रयोगशाला में जाकर स्वयं अभ्यास करना पड़ता है।

तत्कार, तोड़े, टुकड़े, चक्करदार गत, गतभाव, ठुमरी, कवित्व आदि इन सबका निरन्तर अभ्यास करने तथा गुरू से सीखने से ही प्रयोजन सिद्ध हो जाते हैं।

## कथक नृत्य में कल्पना व सृजन का महत्व

कथक नृत्य विकास के लिए कलाकार का प्रथम दायित्व यह है कि कथक को पहले पूरी लगन, निष्ठा, तप व साधना के द्वारा आत्मिक लगाव के साथ सीखना शुरू करें। कथक की सम्पूर्ण समझ व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करती है। कथक का विकास केवल नृत्य प्रतिभा का ही नहीं, मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक जीवन का भी विकास है। यदि कलाकार इसके प्रति पूर्व श्रद्धा व निष्ठा का भाव रखें तो अनेक विषमताओं व कठिनाइयों से भरे आज के युग में कुण्ठा, निराशा, हताशा व तनाव के कोलाहल में कथक आत्मिक शांति प्रदान कर सकता है। कथक ने विरासत से कुछ अधिक ही मोह रखा है और आज भी परम्परा पर पूर्णतः कायम है। समय की माँग व नर्तकों की मौलिक प्रतिभा व सृजनात्मक सक्रियता ने इनमें नवसृजन अवश्य किए हैं, किन्तु परम्परागत बोल–बंदिशें, तत्कार, कवित, ठुमरी, भजन गतनिकास, गतभाव आज भी किए ही जाते हैं। सुदृढ़ परम्परा ही नवसृजन की नींव है। किसी भी नवसृजन में कल्पना का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। कल्पना मानव का विशेष गुण है। यह एक मानसिक क्रिया है। इससे व्यक्ति अपने पिछले अनुभवों के आधार पर किसी नई रचना का निर्माण करता है। वे नवसृजन में सिर्फ शिक्षा का प्रयोग नहीं होता वरन् हमारी भावनाओं, मनोवेगों का भी योग सन्निहित है। जिससे एक ओर मानसिक शक्तियों का विकास होता है। वहीं दूसरी ओर मानव की भावनाओं का विकास होता है। मानव जीवन में भावनाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। कथक में कल्पना, कलाकार की योग्यता, अभ्यास और मस्तिष्क की उपज पर निर्भर करती है। कोई भी कलाकार जितना कल्पनाशील होगा उसका प्रस्तुतीकरण भी उतना ही सशक्त और प्रभावी होगा। प्रतिभा, प्रेरणा व कल्पना किसी भी कला निर्माण की एवं विकास की महत्वपूर्ण कड़ी है। कलाकार का दायित्व होता है कि वह अपनी कला के विकास के लिये इन तीनों का पूर्ण आश्रय लें। कथक गुरूओं ने प्रतिभा व कल्पना को हमेशा महत्व दिया है। नवसृजन की कल्पना अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ी रहती है। कलाकार को नृत्य कला से जुड़े व्यवहारिक ज्ञान का होना आवश्यक है। आस–पास की दुनिया से वह कितना परिचित है। साहित्य से जुड़ाव, काव्य की निकटता, कथक के विशिष्ट शास्त्रबद्ध अभिनय भेदों के साथ काव्य के सौन्दर्य बोध का तालमेल, सुरों की गहराई में उतरने की शक्ति, नृत्य का चित्रात्मक, सौन्दर्य शरीर एवं मनोविज्ञान की समझ, सम्पूर्ण ललित कलाओं के सौन्दर्यबोध की परख होने पर कलाकार अपनी बौद्धिक शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुकूल सृजन कर

अपनी कला की सृजन की पिपासा को शान्त करता है। कथक का रूप इसी के अनुसार गढ़ता है। सृजन प्रक्रिया व परम्परा व्यक्ति व सामूहिकता का मिलाजुला प्रतिरूप है। समाज की बदलती रूचियों और परिस्थितियों के साथ कलाकार को अपनी कला में परिवर्तन करना चाहिए। तभी उसकी कला जन–जन को प्रभावित करेगी।

## कथक में प्रयोग व सम्भावनायें

कथक नृत्य आज प्रयोग की अनेक गतिविधियों से गुजर रहा है। किसी भी कथावस्तु के विस्तार की सम्भावनाएं कथक में अधिक देखी जाती हैं क्योंकि इसमें गतियों और अंग संचालन के प्रयोग में विस्तार की अधिक गुंजाइश है। कथक के इस लचीलेपन का बहुत सफल प्रयोग उसके नृत्य नाट्यों में देखा जा सकता है। कथा पौराणिक हो या आधुनिक दोनों को इसमें समान ढंग से प्रभावपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है। कथक के द्वारा हम आज की सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों आदि को भी दर्शा सकते है। कथक में ऋतुओं, रागों, इन्द्रधनुषी रंगों को लेकर अनेक प्रयोग हुए है। कुछ शाश्वत अवधारणाओं जैसे– पद, ताल आदि के माध्यम से नृत्त पक्ष को भी सौन्दर्यपरक और कल्पनाशील ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

वर्तमान में उपलब्ध नृत्य नाट्य के भण्डार का एक वृहत अंश बिरजू महाराज की देन है। बिरजू महाराज एक अच्छे सृजनकर्ता है। आज कथक गुरूओं को नृत्य के प्रति सबसे व्यापक दृष्टिकोण और कथक प्रदर्शन को सौन्दर्य गरिमा तथा लालित्यपूर्ण रूप देने का बहुत बड़ा श्रेय इनको है। इनकी नृत्य संरचनाओं के अन्तर्गत नृत्य में कबड्डी, खो–खो और चौपड़ जैसे खेलों को प्रदर्शित किया गया था। इन्होंने बहुत से नृत्यनाटिकाओं का सृजन किया रूपमती–बाजबहादुर, गीतगोविन्द, फागलीला, रोमियों–जूलियट आदि। नृत्य पक्ष में बिरजू महाराज जी ने बोल–बांट, तकिट–तकिट घिन का आविष्कार किया है।

दमयंती जोशी ने आधुनिक युग में कथक शैली में अष्ट नायिका प्रसंग प्रस्तुत किया था।

कुमुदनी लाखिया जी ने आधुनिक नारी के अकेलेपन और समस्याओं को लेकर एकदम नये कथ्य को दुविधा जैसी रचना में दर्शाया। वही रानी कर्णा ने विभिन्न अन्तर्विरोधी भावों को ताल और साहित्य के माध्यम से बड़ी खूबसूरती से एक दूसरे के बरक्स रखकर उसे प्रभावपूर्ण बनाया है। उमा शर्मा ने रास से कुछ चीजें लेकर लोकनाट्य, परम्परा का विस्तार दिया, तो रोहिणी भाटे ने कथक के तकनीकी पक्ष में और लयकारी में दिलचस्प प्रयोग किए। इनसे हटकर इनका ऋग्वेद की रचनाओं पर नृत्य प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

नृत्य के बोल बंदिश में ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से भी प्रयोग किये जा सकतें हैं। बोलों के ध्वन्यात्म सौन्दर्य के लिए प्रकृति के कुछ अधिक निकट जाना आवश्यक है। जलतरंगों, हवाओं, वर्षा की बूंदों, बादलों की गड़गड़ाहट, बिजली की चमक, हवा की धीमी गति, चिड़ियों की चहचहाहट न जाने कितने ऐसे ध्वनि प्रकार है जिन्हें शब्दों के धागे में बांधा जा सकता है।

कथक में फ्यूजन प्रयोग में लोक नृत्यों की कुछ गतियां एवं अन्य शास्त्रीय नृत्यों की मुद्राओं गतियों को कथक की गतियों को मिलाकर नवीन प्रयोग किये जा सकते हैं।

नृत्य एक व्यायाम भी है। यह अन्स नीरस तथा कर्तव्यपालन के रूप में की जाने वाली कसरतों के विपरीत अपना एक विशेष महत्व रखता है। नृत्य में जो शारीरिक अंग संचालन और दमदारी की आवश्यकता पडती है। वे ही शरीर के लिए अच्छे से अच्छे व्यायामों का काम करते हैं। मणिपुरी, कथकली, कथक, भरतनाट्यम सभी का नाचने वाले के शरीर पर गति, ध्वनि, भाव भंगिमा, इंगित के अनुसार, अपना–अपना स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव होता है। नृत्य से शरीर के सभी भावो–ग्रीवा, नेत्र, लक्ष, उदर, हाथ तथा पैरों का पूर्ण रूप से व्यायाम होता है। परिणाम स्वरूप शरीर हष्ट–पुष्ट बनता है और अनावश्यक चर्बी को शरीर के किसी स्थान पर एकत्र नहीं होने देता, अपितु वे समस्त शरीर में उचित मात्रा में प्रसारित होती रहती है। जिन लोगों के शरीर में चर्बी बढ़ने वाली हो, उनके लिए नृत्य अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होता है।

योग के आसनों की तरह कथक के तोड़े टुकड़े गतिशील व स्थिर तथा श्वासों को लयात्मक गति देते हैं। गतिशील अभ्यास में वे आसन आते हैं जिनमें शरीर शक्ति के साथ गतिशील रहता है। ठीक उसी तरह कथक के तोड़े, टुकड़े की गतिशीलता एवं कसक – मसक द्वारा श्वासों का भी नियंत्रण व संचालन होता है, जो प्राणायाम की तरह अपना वैज्ञानिक प्रभाव डालते हैं। प्राचीन आचार्यों ने नृत्य के व्यायाम व योगपरक आंगिक संचालन को शामिल किया था।

नृत्य का प्रयोग चिकित्सा में भी हो रहा है। हैदराबाद के एक समाचार पत्र के अनुसार 3 फरफरी 1992 से विकलांग बच्चों की चिकित्सा के लिए अब नृत्य चिकित्सा पद्धति काम मे लाई जा जाएंगी। जिसकी घोषणा हैदराबाद के ठाकुर हरिप्रसाद इन्स्टीट्यूट आफ रिसर्च एण्ड रिहैबीलिटेशन फॉर दी मैन्टली हैन्डीकैप्ड की प्रमुख शिक्षा सुश्री वाणी अनत्यकुल ने की है। उन्होंने कहा कि नृत्य बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास में बहुत सहायक सिद्ध होता है। नृत्य को वैज्ञानिक स्तर पर मानसिक विकास के लिए एवं उन्नत चिकित्सा पद्धति के रूप में पाया गया है।

कथक नृत्य की मुद्राओं का प्रयोग अन्य नृत्य शैलियों मे भी हो रहा है। आज भरतनाट्यम, कुचीपुड़ि और ओड़िसी की प्रमुख नर्तकियों को कथक के कई तत्वों को अपने नृत्य में समाहित करते देखा जा सकता है। जैसे पलटों का प्रयोग, एवं हिन्दी की गेय रचनाओं का प्रयोग। चरित्रों को अलग करने के लिए लयकारियों का प्रयोग।

कथक की शास्त्रीयता के भीतर ही अनेक सृजन किए जा सकते हैं। इसके कई आयाम हैं। प्रथम हिन्दी साहित्य, संस्कृत के श्लोक, दोहे, छन्द आदि पर प्रयोग किए जा रहे हैं। कथक नृत्य की अभिनय क्षमता में इन्हें समावेश करने की पूरी गुंजाइश है।

कथक नृत्य के लिए रचित काव्य व साहित्य की अपनी विशिष्ट परम्परा है। पहले कलाकार नृत्य भी उपज देखते हुए काव्य रचते थे। किन्तु आज अन्य काव्यों में छिपी नृत्यगत परिकल्पनाओं को भी कथक की कल्पना के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस विषय पर सभी कलाकार एकमत हैं कि कथक नृत्य के विकास की यही वास्तविक विशेषता है कि समकालीन परिवेश को स्वीकार करते हुए भी कथक कलाकारों ने कथक के बीते कल को भुलाया नहीं बल्कि आज भी प्रासंगिक बनाया है। वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता में पहले की अपेक्षा वृद्धि हुई है। कथक नृत्य "कथा कहे सो कथक कहावे" अर्थात् इसमें कथा एक अनिवार्य तत्व है और इसके आधार पर हम सामाजिक समस्याओं के प्रति लोगों को जागरूक कर सकते हैं।

प्राचीन समय के कथक नृत्य से आज के वर्तमान समय के कथक नृत्य में बहुत अधिक परिवर्तन आ चुका है। यह परिवर्तन कथानक, वेशभूषा, वाद्यों, साहित्य, प्रस्तुतिक्रम मुद्राओं आदि के साथ–साथ कलाकारों और दर्शकों की मनोवृत्तियों में भी आये हैं।

वर्तमान में उपलब्ध यांत्रिक उपकरणों ने कलाकारों को बहुत लाभान्वित किया है। इसके द्वारा दूरियाँ मिटी हैं, तथा सभी कला ज्यादा सहज और सुलभ हो जाती हैं। कला का आकर्षण भी बढ़ा है।

आज कथक नृत्य में कोरियाग्राफी ज्यादा हो रही है इसका कारण वर्तमान परिस्थितियाँ हैं। वर्तमान युग में समय का अभाव है और प्रतिस्पर्धा अधिक है। इसको देखते हुए दर्शकों की माँग के अनुरूप ही प्रदर्शन करना पड़ता है। पर इसके साथ – साथ अपने परम्परागत मूल्यों का भी निर्वाह करना होगा। चमत्कार के आकर्षण के साथ अपनी कला में भी वृद्धि करनी चाहिये।